उपसंहार

उपसंहार

राही मासूम रजा के उपन्यासों में चित्रित समस्याओं का अध्ययन करने के पश्चात् जो तथ्य निष्कर्ष मेरे सामने आए हैं वे इस प्रकार है-

राही मासूम रजा : व्यक्तित्व एवं कृतित्व -

राही मासूम रजा के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के संबंध में अध्ययन करने के बाद मैं इस निष्कर्ष तक पहुँची हूँ कि राही जी का जन्म 1 सितंबर, 1927 को एक संपन्न एवं सुशिक्षित शीआ परिवार में हुआ था। उन्होंने अपने जीवन में कभी भी किसी के साथ समझौता नहीं किया। उनका व्यक्तित्व अनेक सम-विषम घटनाओं से भरा हुआ था। राही में जब्रदस्त आत्माभिमान, जिंदादिल और जीवन के प्रति अटूट आस्था रही है। राही के घर की आर्थिक स्थिति अच्छी थी। इसी कारण उनका स्वभाव खर्चिला बना था।

राही ने उच्च शिक्षा अलीगढ़ में प्राप्त की जहाँ उन्होंने सन् 1960 में एम्. ए. की उपाधि विशेष सम्मान के साथ प्राप्त की। सन् 1964 में उन्होंने अपने शोध प्रबंध 'तिलस्म-ए-होशरूबा' में चित्रित भारतीय जीवन का अध्ययन पर पीएच्. डी. की उपाधि प्राप्त की। वे साहित्य के सामाजिक पक्ष पर विशेष रुचि रखते थे। डॉक्टरेट की उपाधि के बाद उन्होंने चार वर्ष तक अलीगढ़ विश्वविद्यालय में अध्यापन का कार्य भी किया। राही को वैवाहिक जीवन में अनेक मुसीबतों का सामना करना पड़ा। उनके व्यक्तित्व की प्रमुख विशेषताएँ हैं राष्ट्रवादी, स्वाभिमानी और अच्छे मित्र।

राही उर्दू और हिंदी, दोनों भाषाओं और दोनों लिपियों में बड़ी सहजता के साथ लिखते हैं। उनका विश्वास है कि हिंदी और उर्दू दो अलग-अलग भाषाएँ नहीं हैं और न वे हिंदू-मुसलमानों के धार्मिक संप्रदायों के अनुसार बँटी हुई हैं। वे दोनों भाषाओं को लिपि के आधार पर 'देवनागरी हिंदी' और 'उर्दू हिंदी' कहते हैं। राही मानते हैं कि मुसलमानों को चाहिए कि वे खुलकर हिंदुस्तानी की रूप में धर्म निरपेक्ष राजनीति में भाग ले और सांप्रदायिकता से ऊपर उठें। इसी में हिंदुस्तान का और मुसलमानों का कल्याण है।

सन् 1968 से राही मुंबई में रहने लगे थे। वे अपनी साहित्यिक गतिविधियों के साथ-साथ फिल्मों के लिए भी लिखने लगे थे। राही स्पष्टवादी व्यक्ति थे और अपने धर्मनिरपेक्ष राष्ट्रीय दृष्टिकोण के कारण लोकप्रिय बने थे। निष्कर्ष यह है कि राही बहुमुखी प्रतिभा के साहित्यिक सिद्ध होते हैं।

विवेच्य उपन्यासों का परिचयात्मक विवेचन -

राही मासूम रजा के उपन्यासों का अध्ययन करने के बाद मैं इस निष्कर्ष तक पहुँची हूँ कि राही ने सन् 1946 में लिखना आरंभ किया था। उनका प्रथम उपन्यास सन् 1968 में प्रकाशित हुआ। इसमें राही ने शीया मुसलमानों के दस परिवारों को गाजीपुर के गंगौली नामक वास्तविक गाँव की पृष्ठभूमि में प्रस्तुत किया है। यह उत्तर प्रदेश के गाजीपुर जिले का मशहूर और बड़ा गाँव है, जिसमें हिंदू और मुसलमानों की अनेक जातीयाँ निवास करती हैं। लेकिन राही जी ने इस उपन्यास में केवल शीया मुसलमानों के जीवन को चित्रित करने का प्रयत्न किया है। अन्य जातियों एवं संप्रदायों का उल्लेख मात्र किया गया है। इसीलिए लेखक ने अपने उपन्यास को 'आधा गाँव' कहना उचित समझा। राही ने इस उपन्यास में सन् 1927 से सन् 1852 तक के 15 वर्षों की अवधि में होनेवाली घटनाओं और उनकी गंगौली के शीआ मुसलमानों पर प्रभावों को बाँधने का प्रयत्न किया है। इस उपन्यास के माध्यम से मुस्लिम जन-जीवन पहली बार अपनी समग्रता और संपूर्णता के साथ हिंदी पाठकों के सामने आया है।

राही मासूम रजा का दूसरा उपन्यास 'हिम्मत जौनपुरी' मार्च 1969 में प्रकाशित हुआ। इस लघु उपन्यास की रचना किस्सा गोई की शैली में करते हुए राही जी ने इसे तीन भागों में विभाजित किया है। प्रथम भाग में हिम्मत जौनपुरी के पूर्वजों के पारिवारिक जीवन का वर्णन पाया जाता है। फिर हिम्मत जौनपुरी के जन्म से लेकर उसके मुंबई जाने के पूर्व तक के जीवन का संक्षिप्त परिचय दिया है। दूसरे भाग में लेखक ने मुंबई में दुर्घटना में हुई उसकी मृत्यु का वर्णन किया है। तीसरे भाग में लेखक उसके मुंबई के जीवन का संक्षिप्त परिचय देते हुए बताते हैं कि जब वह मुंबई आया तब कुछ दिनों तक वह इधर-उधर अकेला भटकता रहता है। फिर एक दिन गफ्फार चा नामक चाय की दुकानवाले से उसकी मित्रता होती है जो उसी के गाँव का रहनेवाला था। इसी बीच वह जमुना नामक प्लेटफार्म पर रहनेवाली एक वेश्या से प्रेम करने लगता है। इस उपन्यास में

राही जी ने हिम्मत जौनपुरी के जीवन चरित्र के माध्यम से भारतीय जीवन के संदर्भ में मुस्लिम समाज के संस्कारों के अंतर्द्वंद्व का चित्र प्रस्तुत किया है। साथ में मुंबई महानगर की पृष्ठभूमि में मध्यवर्गीय भारतीय नागरिकों की सामाजिक समस्याओं का भी मार्मिक चित्र प्रस्तुत किया है।

राही जी का तीसरा उपन्यास 'टोपी शुक्ला' सन् 1969 में प्रकाशित हुआ। इस राजनैतिक समस्या पर आधारित चरित्र प्रधान उपन्यास में गाँव के एक निवासी टोपी शुक्ला की जीवन गाथा पाई जाती है। टोपी शुक्ला और इफ्फन घनिष्ठ मित्र थे और साथ में पढ़ते थे। इफ्फन पढ़ाई समाप्त करके अलीगढ़ विश्वविद्यालय में अध्यापक बन गया तब टोपी शुक्ला वहाँ पर हिंदी में एम्. ए. कर रहा था। भारत-पाकिस्तान के विभाजन के बाद सारा वातावरण दूषित हो गया था। सारे देश में झगड़े, बलवे तथा मार पीट हो रही थी। इसी बीच इफ्फन नौकरी के कारण परिवार सहित जम्मू चला जाता है। तब उसके घर में टोपी शुक्ला अकेला रहता है। लेकिन कुछ दिनों बाद वह आत्महत्या करता है। इस उपन्यास के द्वारा राही यह बताते हैं कि भारत-पाकिस्तान के विभाजन का ऐसा कुप्रभाव पड़ा कि हिंदू-मुस्लिमों को मिलकर रहना मुश्किल हो गया। शुक्ला की मृत्यु के द्वारा राही यह बताते हैं कि समय के साथ समन्वय न करनेवाले को आत्महत्या ही करनी पड़ेगी।

सन् 1970 में प्रकाशित राही के चौथे उपन्यास 'ओस की बूँद' का आधार भी हिंदू-मुस्लिम समस्या है। इस उपन्यास में पाकिस्तान के बनने के बाद जो सांप्रदायिक दंगे हुए थे इसका चित्रण एक मुस्लिम परिवार की कथा के माध्यम से प्रस्तुत किया है। इस उपन्यास के द्वारा राही यह दिखलाना चाहते हैं कि पाकिस्तान के बनने के बाद होनेवाले दंगों से मुसलमानों को बहुत हानि हुई। साथ में राही यह भी बताते हैं कि जन्मस्थान का महत्त्व धर्म से कई गुना अधिक होता है।

सन् 1973 में राही का पाँचवा उपन्यास 'दिल एक सादा कागज' प्रकाशित हुआ। इस उपन्यास की जब रचना हुई तब तक सांप्रदायिक दंगे कम हो गए थे। लोगों ने पाकिस्तान के निर्माण को स्वीकार किया था और भारतवासी और मुसलमान शांति से जीवन बिता रहे थे। इस कारण राही ने इस उपन्यास का आधार बदल दिया। राही अब अपने उपन्यासों में राजनैतिक समस्या को छोड़कर सामाजिक विषयों की ओर उन्मुख हुए। राही ने इस में रफ्फन के जीवन के

द्वारा फिल्मों की कहानियों के लेखक के जीवन की गतिविधियों, आशा-निराशाओं एवं सफलता-असफलताओं का वास्तविक चित्रण किया है।

सन् 1977 में प्रकाशित राही का छठा लघु उपन्यास 'सीन-75' है। इसका विषय फिल्मी दुनिया से संबंधित है। इस उपन्यास में मुंबई महानगर के उस बहुरंगी जीवन को विविध कोणों से देखने तथा उभारने का प्रयत्न किया गया है जिसका एक अंग फिल्मी जीवन भी है। विशेषकर इसमें फिल्मी दुनिया से संबंधित व्यक्तियों के जीवन की असफलताओं और उनके दुखमय अंत का अत्यंत सजीव चित्रण किया गया है। साथ में फिल्मी संसार से संबंधित व्यक्तियों की हृदय-हीनता का सजीव चित्रण पाया जाता है।

राही मासूम रजा का सातवाँ उपन्यास 'कटरा बी आर्जू' सन् 1978 में प्रकाशित हुआ। इसका आधार फिर से राजनैतिक समस्या हो गया है। इस उपन्यास में राही यह बतलाना चाहते हैं कि आपात्काल के समय उच्च श्रेणी के स्वार्थी तत्वों ने कैसा अंधकार मचाया, स्थानीय नेता शाही और नौकरशाही ने कैसे खुलकर अत्याचार किया इन सबका उसमें प्रभावोत्पक रूप में चित्रण किया गया है। राही ने इसमें मध्यवर्गीय भारतीय नागरिकों की सामाजिक समस्याओं का मार्मिक चित्र प्रस्तुत किया है।

अंत में कहा जा सकता है कि राही मासूम रजा के उपन्यासों का स्वर समाज की अनेक समस्याओं को लेकर अत्यंत मुखर रहा है। वैयक्तिक क्रिया-कलापों से लेकर राष्ट्रीय घटनाओं तक को उन्होंने अपने कथानकों में समाविष्ट किया है।

विवेच्य उपन्यासों में चित्रित सामाजिक समस्याएँ -

राही जी ने आधुनिक युगीन शिक्षित और विवेकशील नारी के जीवन की समस्याओं के परिपेक्ष्य में दहेज प्रथा, विधवा विवाह, विवाह-विच्छेद, अवैध मातृत्व, अवैध संतान, अनमेल विवाह, प्रेम विवाह, पारिवारिक समस्या, वेश्या वृत्ति आदि समस्याओं का विस्तृत विवेचन किया है। इन प्रमुख समस्याओं का समाधान स्त्री के स्वावलंबी बनकर जीवन की वास्तविकताओं से जूझने में ही है। इसके साथ-साथ अप्राकृतिक यौन जिजीविषा, आत्महत्या, जैसी अनेक वैयक्तिक समस्याओं का भी अत्यंत प्रभावशाली चित्रण हुआ है। राही ने आत्महत्या के संबंध में अपनी यह

धारणा स्पष्ट कर दी है कि आत्महत्या उन्हीं के लिए उपयुक्त है जो सामाजिक संघर्ष के लिए असमर्थ हैं। सांप्रदायिकता की समस्या के बारे में राही जी का मत है कि वास्तव में सांप्रदायिकता की कोई समस्या ही नहीं है। भारत अनेकता में एकता परिलक्षित करने के लिए संसार भर में अद्‌वितीय है। सदियों से हिंदू-मुसलमान भाई-भाई बनकर रहते चले आए हैं। राजनैतिज्ञों के बहकावे में आकर ही यह लोग आपस में झगड़ा करते हैं। उर्दू-हिंदी समस्या की चर्चा करते हुए राही जी यह स्पष्ट करते हैं कि वास्तव में हिंदी-उर्दू का झगड़ा व्यक्तिगत हानि-लाभ का झगड़ा है। हिंदी-उर्दू की कोई समस्या ही नहीं है क्योंकि दोनों एक ही भाषा के दो विभिन्न रूप हैं जो दो भिन्न-भिन्न लिपियों तथा शैलियों में लिखे जाते हैं।

जातिवाद की समस्या के बारे में राही ने यह स्पष्ट कर दिया है कि इस समस्या का सामना केवल भारत के हिंदुओं को ही नहीं वरन् यहाँ के मुसलमानों को भी करना पड़ता है। राही जी ने स्वयं मुसलमान होकर भी मुसलमानों में पाए जानेवाले जातिवाद का निष्पक्ष भाव से चित्रण किया है, जो उनका तटस्थ स्वभाव का द्‌योतक है।

विवेच्य उपन्यासों में चित्रित राजनीतिक समस्याएँ -

युद्‌ध की समस्या के बारे में राही जी ने अपने अनुभव तथा अनुभूतियों का स्वाभाविक चित्रण करते हुए इस समस्या के भयंकर अनुपात की ओर संकेत किया है।

भ्रष्टाचार की समस्या की सर्वांगीणता का वर्णन करते हुए राही जी ने यह बतालाया है कि गाँवों के कोने-कोने में इसका प्रभाव दिखाई देता है। लेखक ने इस सर्वव्याप्त सामाजिक व्याधि का अत्यंत हृदयग्राही चित्रण प्रस्तुत किया है।

राष्ट्रीय एकात्मकता की समस्या का चित्रण करते हुए राही जी ने अपनी यह धारणा स्पष्ट की है कि प्रत्येक नागरिक के लिए जन्मभूमि, धर्म-संप्रदाय आदि सबसे महान है। इस धारणा के द्‌वारा राही एक सच्चे राष्ट्र प्रेमी के रूप में हमारे सामने आते हैं। प्रशासनिक अव्यवस्था की समस्या का चित्रण करके राही जी ने इसका समाधान अपराधियों के सुधारने में निहित है यह स्पष्ट किया है।

विवेच्य उपन्यासों में चित्रित आर्थिक तथा अन्य समस्याएँ -

राही मासूम रजा बेरोजगारी की समस्या का चित्रण करते हुए यह स्पष्ट करते हैं कि इस समस्या का समाधान उस समय तक संभव नहीं है जब तक भारतवासी इसके निवारण के लिए केवल सरकार से आशा करना नहीं छोड़ते तथा अथक परिश्रम करके उन्नत्ति के मार्ग पर आगे नहीं बढ़ जाते। दरिद्रता की समस्या का वर्णन करके राही इसका समाधान इसी में मानते हैं कि लोग झूठी इज्जत के पीछे दौड़ते हुए अपने पारिवारिक जीवन को छिन्न-भिन्न न करे तथा तुरंत धनवान बनने के चक्कर में न पड़े।

भिक्षावृत्ति का तथ्यात्मक चित्रण प्रस्तुत करके राही ने यह स्पष्ट किया है कि भिखारी दया के पात्र नहीं हैं क्योंकि आज यह भी एक व्यवसाय हो गया है। भारत में यह समस्या ज्यादा पनपती रहने का कारण भारतीयों का दयालु स्वभाव है। मूल्य-वृद्धि की समस्या का समाधान सामाजिक वर्गों के बीच विषमता एवं अंतरों के निवारण में ही निहित है। साथ में राही जी ने यह बतलाया है कि आर्थिक उन्नति में ही भौतिक सुख है।

वर्ग संघर्ष की समस्या का चित्रण करके राही ने यह स्पष्ट किया है कि जब तक समाज वर्गों के बीच असमानता रहेगी, तब तक वर्ग-संघर्ष समस्या भी बनी रहेगी। इसका समाधान तब होगा, जब वर्गों के बीच से विषमता का निवारण होगा। ऋणग्रस्तता यह ग्रामीण भारत की सबसे प्रधान आर्थिक समस्या है जिसके समाधान पर ही हमारा सामाजिक सुख और कल्याण निर्भर है।

उपलब्धियाँ -

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध की महत्त्वपूर्ण उपलब्धियाँ इस प्रकार हैं-

1. राही मासूम रजा के अनुसार सांप्रदायिकता इस देश की महत्त्वपूर्ण समस्या है। जब तकि हिंदू-मुसलमान राजनेताओं के बहकावे में आएँगे तब तक सांप्रदायिक दंगे-फसाद होते रहेंगे। लेकिन राही मासूम रजा द्वारा चित्रित इस समस्या के यथार्थ रूप को पढ़नेवाला हर संवेदनशील पाठक सांप्रदायिकता को बढ़ावा देने की भूल कभी नहीं करेगा।

2. राही मासूम रजा ने उर्दू और हिंदी को एक ही भाषा के दो रूप मानकर इस झगड़े के मूल को ही उखाड़ दिया है। अतः राही जी के उपन्यासों को पढ़नेवाला हर जिम्मेदार भारतीय नागरिक हिंदी-उर्दू झगड़े को बढ़ाने का काम कभी नहीं करेगा।
3. हर धर्म के अनुयायी अपने धर्म के मूलतत्व को जब समझ जाएँगे तब दो भिन्न धर्मीय समाज में झगड़ा नहीं होगा। राही जी ने धर्मांध लोगों को धर्म के सही रूप को पहचानने का संदेश दिया है। इस शोध-प्रबंध की यह महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है।
4. राष्ट्रीय एकात्मता को बनाए रखने के लिए राही जी ने संकेत दिए हैं कि धर्म, जाति, भाषा और प्रांत से बढ़कर राष्ट्र होता है। अतः हर भारतीय नागरिक को इसका एहसास होना चाहिए। राही जी के ये विचार अहम उपलब्धि सिद्ध होते हैं।

अध्ययन की नई दिशाएँ -

राही मासूम रजा के उपन्यासों में निम्नांकित विषयों को लेकर स्वतंत्र रूप से अनुसंधान हो सकता है -

1. राही मासूम रजा के उपन्यासों में चित्रित स्त्री-पुरुष संबंध।
2. राही मासूम रजा के उपन्यासों में चित्रित राष्ट्रीय भावना।
3. राही मासूम रजा के उपन्यासों का भाषा-शास्त्रीय अध्ययन।

वस्तुतः हर शोध-विषय की अपनी सीमा होती है। यह लघु शोध-प्रबंध भी अपनी सीमा में संपन्न हुआ है। ऊपर निर्देशित शोध-विषय स्वतंत्र अनुसंधान कार्य की माँग करते हैं। शायद आनेवाले शोधार्थी इसे संपन्न करेंगे।